श्री रामकथा मानस महाकाल का अष्टम दिवस

30 अप्रैल, उज्जैन । जूनापीठाधीश्वर आचार्यमहामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित प्रभु प्रेमी संघ शिविर में आहूत श्री राम कथा "मानस महाकाल" के अवसर पर व्यासपीठ से पूज्य मोरारी बापू ने कहा महाकाल के मंदिर में भुसुंडि के गुरु की साधुता देख कर भगवान् शंकर द्रवित हो जाते है। साधू की पहचान करने में बारह लक्षण देखना अत्यंत आवश्यक है। 1) आप और मुझे लगे की ये व्यक्ति निरंतर जप कर रहा है। 2) साधू व्यवस्था नहीं है साधू अव्यवस्था है। साधू लकीर का फकीर नहीं है। उनके इर्दगिर्द अस्तित्व व्यवस्था करता है।जो दान देता है विद्या कला अध्ययन दौलत जो भी है वो दूसरों को बाट देता है , जो निरंतर देता है। जो खुद को लूटा देता है। 3) साधू वो है जो बहुत अध्यन करता है पांडित्य प्राप्ति के लिए नहीं प्रेमी होने के लिए। मेरा प्रेम मेरी भक्ति बड़े साधुओं के संघ बैठे। 4) साधू वो है जो श्रम करे प्रमाद नहीं। एक कोने में बैठ कर जो विश्वमंगल की कामना करे। 5) साधू वो जो तपस्वी है। सबसे बड़ा तप वह है तुम निर्दोष हो निंदा का जहर पीते रहो , जो निंदा का बदनामी का जहर पिये वो साधू। 6) सम्यक रूप में इन्द्रियों का नियम सय्यम करे ये साधुता का स्वाभाव है। 7) जिसको एकांतवास प्रिय हो। 8) जिसको मौन बहुत प्रिय है। क्या ज्यादा बोलना। बोले तो निहाल कर दे बुद्ध पुरुष बोलने पर भी नहीं बोलता उसका मौन बोलता है। 9) जो सत्य ही बोलता है वो साधू है सत्य स्वतंत्र है , सत्य उसे किसी परतंत्र में बांधा नहीं जा सकता। 10) जो व्यक्ति अहिंसक है। जो किसी की हिंसा ना करे वो साधू है। 11) भगवान् के चरणों में जिसकी अपार प्रीति हो वो साधू है। 12) जिसके भीतर परिपूर्णता हो वो साधू है।

शायरी तो बहाना है असल मकसद तो तुझे रिझाना है। साधू प्रेम के लिए दौड़ता हूँ , पैसों के लिए नहीं। तुम्हारे चेहरे पर एक मुस्कान आ जाये तो में समझूँ मेरा मिशन सफल हो गया। गुरु का घर नहीं होता आश्रित का हृदय ही गुरु का घर होता। एक दूसरे के साथ संघर्ष में रहेंगे और भय में जीयेंगे तो कभी अपने में एकता नहीं आएगी। संवादपना नहीं जन्म लेगा। हृदय की यह समझ को नही खिलने से निरंतर उलझन ही रहेगी और बाहरी , जगत का कोई गुरु यह उल झन दूर नही कर सकेगा। बौद्धिक समझ मर्यादित है। इसलिए सत्य-प्रेम-करुणा के मार्ग पर हंमेशा यात्रा करे तो विवेक जाग्रत रखकर यात्रा करें।

सत्य के संघ को ही सत्संग कहते है। सत्संग को केवल धार्मिक परिप्रेक्ष्य में न देखा जाए क्योंकि सत्संग तो विवेक का दर्पण है। सत्संग से व्यक्ति का विवेक जाग जाता है और विवेकवान व्यक्ति नया युग लाने में पूरी तरह से सक्षम होता है। सेवा करने वाला कभी कभी द्वेष कर सकता है लेकिन प्रति करने वाला कभी द्वेष नहीं करता है। किसी भी जाति या देश का नागरिक हो – अपने अंदर आंतरिक तौर से करुणा भाव जन्मे , यही सच्ची मानवसेवा है। हकीकत में , विवेक ही अपना सच्चा गुरु है। सत्संग का

प्रतिफल है सत्य , प्रेम और करुणा: विवेक जागृत होगा तो हमको सत्य-प्रेम-करुणा के मार्ग पर यात्रा करना सरल बनेगा।

श्री रामकथा के शुभ अवसर शिविर प्रमुख एवं कथा यजमान विनोद अग्रवाल जी ने पोथी पूजन किया, पूज्य कार्ष्णिपीठाधीश्वर स्वामी गुरुशरणानंद जी महाराज , परमार्थ निकेतन के परमाध्यक्ष पूज्य स्वामी चिदानंद सरस्वती जी, पूज्य मलूकपीठाधीश्वर स्वामी राजेंद्रदास जी महाराज एवं श्री प्रेमभूषण जी महाराज प्रभु प्रेमी संघ शिविर की अधिशासी प्रभारी पूज्या महामण्डलेश्वर स्वामी नैसर्गिका गि रि जी की पावन उपस्थिति रही।

मीडिया सेल

प्रभु प्रेमी संघ कुंभ शिविर उज्जैन

उजरखेड़ा, भूखीमाता चौराहे के पास, बड़नगर रोड, उज्जैन